P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-6* February- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

अरुण कुमार
प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकटंक, मध्य प्रदेश

सारांश

शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता है। छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे। शैक्षिक लब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है इस अध्ययन में 200 छात्रों को न्यायर्दश के रूप में लिया गया है। (100 किशोर – 100 किशोरियां) बच्चे के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बच्चे में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। यह देखा गया है कि एक ही विषय में एक जैसा अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण करते हुए भी बालकों की रूचियों में विभिन्नता पायी गयी है। शहरी क्षेत्रों में रूचियों का पर्याप्त विकास होता है और उनकी रूचियां विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य आदि विषयों में अधिक होती है जब की ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर व किशोरियों कि शैक्षिक रूचि कला, कृषि तथा गृह विज्ञान जैसे विषयों में होती है। शहरी किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियां ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियों से भिन्न होती है।

मुख्य शब्द : शहरी एवं ग्रामीण, माध्यमिक स्तर, शैक्षिक रूचि, तुलनात्मक अध्ययन, किशोर व किशोरियों।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के जीवनपर्यंत चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी पूर्व संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है और उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरंतर विकास कर सकें। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यालयों मं ज्ञान कला कौशल तथा अच्छे व्यवहार का विकास किया जाता है। शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शिक्षा समाज और मानव की आत्मा है तथा उसके विकास में सहायक है। यदि समाज मानव का दर्पण है तो मानव शिक्षा का दर्पण है। अर्थात मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन में जो वृद्धि करता है जिन जिन पहलुओं का विकास करता है वह सब शिक्षा से संभव है।

शिक्षा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य अपने जन्म के बाद से ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ कर देता है और शिक्षा की यह प्रक्रिया चलती रहती हैं। प्रारंभ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर–परिवार एवं समुदाय कहते हैं। तत्पश्चात व्यक्ति औपाचारिक साधनों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है। प्रारंभ में जहां शिक्षा द्वारा बालक अपने गुरु से ज्ञान एवं सूचनाएं प्राप्त करता था, वहीं आज शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को ऐसा परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता है।

छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे भारत में शिक्षक शिक्षा बहुत ही उपेक्षित रही यद्यपि इसका सीधा संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से होता है। देश की वांछित प्रगति के लिए शिक्षक शिक्षा में समुचित सुधार लाना आवश्यक होता है।

बच्चे के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बच्चे में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। यह देखा गया है कि एक ही विषय में एक जैसा अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण करते हुए भी बालकों की रूचियों में विभिन्नता पायी गयी है। अधिगम के सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट है कि बालक अपनी रूचि के अनुसार ही शिक्षण ग्रहण करता है। यह बात स्पष्ट है कि प्रभावी अधिगम बच्चे की रूचियों के विरूद्ध नहीं किया जा सकता है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी हैं जैसे सामान्य तथा विशेष योग्यता, अध्ययन के क्षेत्र में रूचि, उसकी अध्ययन संबंधी आदतें, घरेलू तथा विद्यालय आदि का वातावरण तथा आर्थिक परिस्थितियां आदि। शैक्षिक लब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है परंतु शोधकर्ता के विचार में सबसे प्रभावी कारक बच्चे की रूचि है जो वह किसी अधिगम क्षेत्र में रखता है। रूचि–सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रीय शक्ति है एवं रूचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके दृष्टिकोणों प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधित विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण को दिशा निर्देशित करता है।

शैक्षिक रूचि

रूचि से तात्पर्य कार्य विशेष के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया से है। विद्यार्थी जिस विषय को अपने स्तर के अनुसार सरल व संतुष्टि प्रदायक मानता है, करता है। उसी में अपनी रूचि प्रदर्शित करता है। इसे बालक की शैक्षिक रूचि के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण क्षेत्र के किशोरों की शैक्षिक रूचि को अध्ययन करना।
2. ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
3. शहरी क्षेत्र के किशोरों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
4. शहरी क्षेत्र की किशोरियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. शहरी किशोरों व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की शैक्षिक रूचि में कोई अंतर नहीं है।
4. शहरी किशोरियों एवं ग्रामीण किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

1. इस अध्ययन में बिलासपुर जिले के 4 राजकीय वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
2. 200 छात्रों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। (100 किशोर – 100 किशोरियां)

आंकड़ों के संकलन की विधि

शोधकर्ता ने विवरणात्तमक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

सांख्यिकी तकनीक

मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी रेशों।

शोध उपकण

डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ का शैक्षिक रूचि प्रपत्र।

प्रदतों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

सारणी–1

शहरी किशोरों व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिंग	मदोंकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर(शहरी)	50	6.5	3.94	2.60	0.05
किशोरियां (शहरी)	50	5.00	4.09		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.60 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और शहरी किशोरियों का मध्यमान 5.00 है जो कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरों में शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है। समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि किशोरों की शैक्षिक रूचि किशोरियों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। परंतु वर्तमान समय से लड़कियों ने भी तकनीकी विषयों की पढ़ाई पर जोर देना प्रारंभ कर दिया है और वह इस विषय को पसंद करने लगी हैं। परंतु फिर भी देखने से पता चलता है कि तकनीकी शिक्षा में लड़कों के द्वारा ज्यादा रूझान देखने को मिलता है। किशोर किशोरियों की रूचियों में पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

सारणी–2

ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिंग	मदों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (ग्रामीण)	50	5-06	2.46	0.56	0-05
किशोरियां (ग्रामीण)	50	5.85	1.85		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य .56 है जो 0.05 पर सार्थक है। ग्रामीण किशोरियों का मध्यमान ग्रामीण 5.85 है और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 जो कि ग्रामीण किशोरियों के मध्यमान से कम है। अतः ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

सारणी–3

शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की शैक्षिक रूचि में कोई अंतर नहीं है।

लिंग	मदों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोर (शहरी)	50	6.5	3.94	2.50	0.05
किशोर (ग्रामीण)	50	5.06	2ण्46		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.50 है जो 0.05 पर सार्थक है। शहरी किशोरों का मध्यमान 6.5 और ग्रामीण किशोरों का मध्यमान 5.06 है जो कि शहरी किशोरों के मध्यमान से कम है। अतः शहरी किशोरों में शैक्षिक रूचि की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि शहरी किशोरों की शैक्षिक रूचि ग्रामीण किशोरों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है। शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की रूचियों में पर्याप्त अंतर है। अतः परिकल्पना असत्य प्रतीत होती है।

सारणी–4

शहरी किशोरियों एवं ग्रामीण किशोरियों की शैक्षिक रूचि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

लिंग	मदोंकी संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या	सार्थकता
किशोरियां (ग्रामीण)	50	6.5	3.94	2.50	0.05
किशोरियां (शहरी)	50	5.00	4.09		

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 'टी' मूल्य 2.50 है जो 0.05 पर सार्थक है। ग्रामीण किशोरियो का मध्यमान 6.5 और शहरी किशोरियों का मध्यमान 5.00 है जो कि ग्रामीण किशोरियो के मध्यमान से कम है। अतः ग्रामीण किशोरियो में शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में अधिक है। इनकी शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर है। अतः जो परिपक्वता की गई थी वह सत्य है।

समूचित समीकरण या अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण किशोरियो की शैक्षिक रूचि शहरी किशोरियों की तुलना में तकनीकी शिक्षा में अधिक है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस प्रकार प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त उपलब्धियां इस प्रकार है–

1. शहरी छात्रों की शैक्षिक रूचि उच्च स्तर पाई गयी है। शहरी किशोरों की भांति शहरी किशोरियों पर भी उनके वातावरण का प्रभाव होता है। इनकी रूचियों के निर्माण पर इनके पारिवारिक वातावरण व रहन–सहन तथा शहरीकरण का प्रभाव होता है।
2. ग्रामीण किशोरों की रूचियों पर उनके पारिवारिक कार्यों का प्रभाव ज्यादा होता है।
3. ग्रामीण परिवेष का प्रभाव वहां रहने वाले सभी व्यक्तियों पर पड़ता है। ग्रामीण किशोरियों की रूचियों पर भी ग्रामीण रहन–सहन तथा क्रिया–कलाप का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

शोधकर्ता ने अनुपपुर जिले के तीन ग्रामीण तथा तीन शहरी विद्यालयों का चुनाव का उन विद्यालयों के किशोर/किशोरियों की शैक्षिक रूचि में पर्याप्त अंतर है। शहरी क्षेत्र के किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियां विज्ञान तकनीकी और वाणिज्य आदि विषयों में अधिक होती है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के किशोर व किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धियां कृषि कला तथा गृह विज्ञान आदि विषयों में अधिक होती है। इसी प्रकार शहरी किशोर व किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य जैसे विषयों में कला, कृषि तथा गृह विज्ञान की अपेक्षा अधिक होती है। दूसरी तरफ किशोर/किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य की अपेक्षा कला कृषि तथा गृह विज्ञान जैसे विषयों में ज्यादा होती है। किशोर किशोरियों की शैक्षिक रूचि का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर व्यापक रूप में पड़ता है। शहरी किशोर व किशोरियों को शहरों में अच्छा पालन–पोषण, रहन–सहन तथा उच्च शैक्षिक सुविधाएं प्राप्त होती है। इनकी तुलना में ग्रामीण किशोर व किशोरियों को निम्न श्रेणी का रहन–सहन, पालन–पोषण तथा शैक्षिक सुविधाएं प्राप्त होती हैं। इनके जीवन क्षेत्र को संबंधित सुविधाओं का तथा वातवरण और रहन–सहन का प्रभाव इनकी रूचियों के निर्माण पर पड़ता है और यही कारण है कि शहरी किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियां ग्रामीण किशोर व किशोरियों की शैक्षिक रूचियों से भिन्न होती है।

अनुसंधानकर्ता ने यह निष्कर्ष विभिन्न परीक्षणों के आधार पर दर्शाया है कि शहरी क्षेत्रों में रूचियों का पर्याप्त विकास होता है और उनकी रूचियां विज्ञान तकनीकी तथा वाणिज्य आदि विषयों में अधिक होती है जब की ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर व किशोरियों कि शैक्षिक रूचि कला, कृषि तथा गृह विज्ञान जैसे विषयों में होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *मंगल, डॉ. एस के – शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान टंडन पब्लिशर्स, लुधियाना–2007*
2. *पाठक, पी.डी.–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2007–08*
3. *शर्मा, आर.ए.–शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इंटर कॉलेज।*
4. *कौल, लोकश – शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिशिंग हाऊस, प्रा. लि. 2007*
5. *कुलश्रेष्ठ, एस.पी. – शिक्षा मनोविज्ञान*

6. *वालिया,डॉ. जे.एस.–शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, अहम पाल पब्लिशर्स, एन.एन. 11 गोपाल*
7. *Awang, M. and Sinnadurai, S.K. (2010). A study on the development of strategic tools in study orientation skills towards achieving academic excellence.* Journal of Language Teaching and Research, *Vol. 2, No. 1, pp. 60-67.*
8. *Bashir, I. & Mattoo, N.H. (2012). A study on study habits and academic performance of adolescents (14-19) years.* International Journal of Social Science Tomorrow, *Vol. 1* (5)